दशकण्ठविरचित

श्रीशिवताण्डवस्तोत्र

पद्य तथा गद्यानुवाद सहित

अनुवादक

पं० सूर्यदीनजी शुक्ल

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू केसरीदास सेठ के प्रबंध से

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित

चौथी बार] सर्वाधिकार सुरक्षित [सन् १९३४ ई०



श्रीगणेशाय नमः ।

शिवताण्डवस्तोत्रप्रारम्भः ।

अहंगणाधिपंगजाननंस्मरारिपुत्रमे-
कदंतमद्रिजाप्रियंसुतुन्दिलंकृपाकरम् ॥
करालविघ्ननाशकंविशालज्ञानकाशकं
सदाहिमेसुरक्षकंभजेभवाखिलार्त्तिहम् १

शिवके सरिता सुर शीश लसै विलसै उरमें नरमुंडन माला । तनु भस्म विभूषित भूषित चर्म मतंग अनंग विनाशन काला ॥ चमकैं मणिपंक्ति जटा बनमें फुफकैं फणिराज विशाल कराला । हम चाहत हैं वहि शंकर में रति सोहत जासु सुधाकर भाला ॥

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलंब्यलंबितांभुजङ्गतुङ्गमालिकाम्
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्व्वयं
चकारचंडतांडवन्तनोतुनःशिवःशिवम् १

जो शिव गङ्ग तरङ्ग जटा बनसों शुचि कण्ठ सदा झरिलावैं। माल भुजङ्ग प्रलम्ब गरे अवलम्बित कै रुचिवेश बनावैं। ताण्डव नृत्य करैं अरु नाद डमड्डमकै डमरू डमकावैं। सो शिव मोर करैं शिवजी हम वाहि सदा शिव को यश गावैं॥ १ ॥

जिन श्रीमहादेवजी के पवित्र कण्ठ में गङ्गाजीकी धारा जटासमूहों से गिर रही है उसी कण्ठ में बहुत लम्बी व ऊँची सर्पों की माला पहिन के और डम डम डम डम डमरू को बजाते हुये श्रीशङ्करजी ताण्डव नाच नाचते भये वे शिवजी हमारा कल्याण करैं॥ १ ॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि ॥
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणम्मम २

जटा बन कम्पित कम्पति गङ्ग तरङ्गित सन्तति मस्तक राजै । धगद्धगज्वाल कृशानु महान ललाटपटा बिच तेज विराजै ॥ किशोर सुधाकर सोहत शीश सदाशिवकी छबि या बिधि छाजै । क्षण प्रति प्रीति वही शिवमें हिय में मम होय सदा बिन काजै ॥ २ ॥

जिन श्रीमहादेवजी के मस्तक में जटासमूहों के हिलने से गङ्गाजी की लहरियों की पंक्ति अधिकतर कम्पायमान होकर चमचमाती हुई विराजमान हैं व उसी मस्तक में धग धग धग धग अग्निरूपी तेज प्रकाशमान होरहा है और बालचन्द्र अर्थात् द्वितीया का चन्द्रमा जिस मस्तक में सुशोभित है ऐसी छविवाले सदाशिव में हमारी प्रीति क्षण २ में होवै ॥ २ ॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दृगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ॥
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्द्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरेमनोविनोदमेतुवस्तुनि ३

भूधरनाथसुता प्रिय रास कटाच्छन सों मुद मानस जाको। हेरतही दृगकोर कृपा जनओर विनाशतहैं बिपदाको ॥ अम्बरहीन दिगम्बर शङ्कर ध्यावत हौं नित स्वामिशिवा को। मो मन हर्षित होइ कदा प्रणवों नित नायक शैलसुता को ॥ ३ ॥

श्रीपार्वतीजीकी प्यारी क्रीड़ा में कटाक्ष की पंक्तियों से आनन्दचित्तवाले और दया की चितवनि सों बहुत कठिन आपदा के रोकनेवाले दिगम्बर अर्थात् नग्नवेष शङ्कर में हमारा मन कब हर्षित होके प्रीति करेगा ॥ ३ ॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा
कदम्बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ॥
मदान्धसिन्धुरास्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनोविनोदमद्भुतम्बिभर्त्तुभूतभर्त्तरि ४

पीत भुजङ्ग जटा लपटे तिनके फण में मणि-पंक्ति प्रकासै। दीप्तिसमूह परागन के रस लिप्त होइ दिशा मुख भासै ॥ मत्त मतङ्ग सुचर्म ढके तिहिसों अति सुन्दर रूप हुलासै। मों मन चित्रित रूप विलास करै नित वाहि शुचि-स्मित हासै ॥ ४ ॥

जिन श्रीसदाशिवजी की जटाओं में पीले पीले सर्पों के फणों की मणिन के झुण्ड चमचमाते हुये दिशाओं को किस तरह प्रकाशित करते हैं कि मानों काली काली स्त्रियाँ रूपी दिशाओं के मुख में केसरि का पराग लिप्त हो रहा है और दुपट्टारूपी मतवाले हाथी के चर्म को ओढ़े सुन्दर देहवाले सम्पूर्ण प्राणियों के स्वामी श्रीमहादेवजी में हमारा मन सदा क्रीड़ा करे ॥ ४ ॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गया
निपीतपञ्चसायकन्नमन्निलिम्पनायकम् ॥
सुधामयूखरेखयाविराजमानशेखरं
महऽकपालिसम्पदेसरिज्जटालमस्तुनः ५

पावकज्वाल ललाटपटा रतिनाथहिं शङ्कर पान कियो है। मान मथ्यो सुरनायक को जब काज मनोगत भङ्ग भयो है ॥ माथ सुधाकर रेख जटा सरि मालकपाल लसै सुहियो है। देहु सदाशिव सम्पति मों तुम्हरी शरणागत आय लियो है ॥ ५ ॥

जिन श्रीशिवजी के विशाल मस्तककी जलतीहुई तेज-रूपी अग्निज्वालाओं ने इन्द्र को नवातेहुये कामदेवको भस्म कर डाला और जिन श्रीमहादेवजी के मस्तक में अमृत की किरणवाले चन्द्रमा की रेखा व जटाजूट में गङ्गाजी और कण्ठ में मुण्डमाल विराजमान है वे श्रीशङ्करजी हमको सम्पूर्ण सम्पत्ति देवैं ॥ ५ ॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेखलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसरांघ्रिपीठभूः ॥
भुजङ्गराजमालयानिबद्धजाटजूटकः
श्रियेचिरायजायताञ्चकोरबन्धुशेखरः ६

देव सबै सुरनायक आदिक शम्भुनिकेत सदा चलि आवैं। शीश किरीट प्रसून पराग घिसैं पदमें तिहिसों रँजिजावैं। माथ निशाकर मालभुजङ्गप बद्ध जटा अवली छबिछावैं। सो मम देहिं सदा सुख सम्पति शङ्करके पदमें शिरनावैं ॥ ६ ॥

जिन श्रीमहादेवजी के चरणों के ऊपरभाग में इन्द्र को आदि लेकर सम्पूर्ण देवता अपने २ मस्तकों को रगड़ते हैं उससे मुकुटों के फूलों का पराग शिवजी के चरणकमल में सुशोभित है और सर्पों के राजा वासुकी आदिकों की माला से जिनकी जटाजूट बँधी है व चकोर को प्रिय जो चन्द्रमा सो जिनके मस्तकमें विराजमान है ऐसे सदाशिवजी हमको चिरकाल तक धन सम्पत्ति देवैं ॥ ६ ॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ॥
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनित्रिलोचनेरतिर्म्मम ७

भाल कराल हुताशन ज्वाल धगद्धग तेज विराजत जोई । आहुति काम कियो तिहिकी जरि छारभयो तब ता तिय रोई ॥ दे बर ताहि शिवाकुच चित्र प्रकल्पनको निज शिल्पि भयोई । हे त्रयलोचन तो पदपङ्कजमें निजभक्ति चहौं प्रभु सोई ॥ ७ ॥

जिन श्रीमहादेवजी ने अपने कराल मस्तकके धग धग धग धग जलते हुये अग्निरूपी तेज में बड़े भयङ्कर कामदेव को हवन करदिया और फिर श्रीपार्वतीजी के स्तनों के अग्रभागमें चित्रसारी बनाने के लिये अपनी एक श्रेष्ठ कारीगरी प्रकट की ऐसे तीननेत्रवाले श्रीमहादेवजी में मेरी प्रीति होवै ॥ ७ ॥

नोट—कामदेव को भस्म करने से शिव योगी हैं ॥
श्रीपार्वतीजी के संग विलास करने से शिव भोगी हैं ॥
भक्तों के लिये भक्तिदाता हैं इससे दयालु हैं ॥
त्रिनेत्र-एक नेत्रसे अखण्ड योगेश्वर । दूसरे नेत्र से संसारके प्रवर्त्त करनेवाले । तीसरे नेत्र से भक्तों पर दया करनेवाले ॥

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्द्धरस्फुरत्
कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः ॥
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतुकृत्तिसुन्दरः
कलानिधानबन्धुरःश्रियञ्जगद्धुरन्धरः ८

निशीथ अमावस के तममें घनमंडल वारि-घटा युत सोहै। तदाऽसितकण्ठ महेश विलोकि विलज्जित ह्वै असिता निज मोहै ॥ कलाधर शेखर देवसरीधर चर्ममतंग शरीर ढको है। अहो मम सम्पतिदायक विश्वधुरन्धर तो रुचि वेष बनो है ॥ ८ ॥

जिस अमावस की अर्द्धरात्रिमें नये नये मेघ काली घटाओं से मण्डल बाँधके विराजमान हुयेहों उस समय की श्यामताके तुल्य जिनका श्याम कंठ और गंगाजी के धारण करनेवाले व गजचर्म से सुन्दर व चन्द्रमा जिनको प्यारा और संसार के भारको धारण करनेवाले श्रीसदाशिवजी हमको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि सम्पत्ति देवैं ॥ ८ ॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्॥
स्मरच्छिदम्पुरच्छिदंभवच्छिदंमखच्छिदं
गजच्छिदांधकच्छिदंतमंतकच्छिदंभजे९

नीलसरोज प्रफुल्ल प्रभाचय को निज कण्ठ महेश धरैहैं। कामविनाशक नाशक दत्त प्रजा-पति यज्ञ भवाब्धि हरैहैं॥ अन्धक औ त्रिपुरा-सुर नाशक औ यमराज विनाश करैहैं। या विधि रूप विचिन्त्य सदा शिवशंकरके हम पैर परैहैं॥ ९॥

फूलेहुए नीलकमल की काली प्रभासमूह के समान श्याम है कण्ठ जिनका व कामदेव के छेदनेवाले और त्रिपुरासुर व संसार व दक्षप्रजापति की यज्ञ व गजासुर के मारनेवाला अंधकासुर तिसके छेदनेवाले और यमराजके भी छेदनेवाले श्रीमहादेवजी को मैं भजन करताहूं॥ ९॥

अखर्व्वसर्व्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ॥
स्मरांतकम्पुरांतकम्भवांतकम्मखान्तकं
गजांतकांधकांतकंतमन्तकांतकंभजे १०

चौंसठि सर्वकलायुत विद्यहि धार रसामृत के अलिरूपा। कामविदारण दारण दक्ष प्रजापति यज्ञ हनैं भवकूपा ॥ अन्धक औ त्रिपुरासुर मारण और विदारणहैं यमभूपा। नेकु इतै शिव हेरु कृपा दृग ध्यावतहौं तव रूप अनूपा ॥१०॥

सम्पूर्ण विद्यारूपी कदम्ब व चौंसठि कलारूपी लता व मधुरतारूपी रसकी धाराके पानकरने के लिये जो श्री महादेवजी भ्रमररूपी होरहे हैं और कामदेव व त्रिपुरासुर व संसार व दक्षप्रजापति की यज्ञ व गजासुरके मारनेवाले अन्धकासुर व यमराजके भी नाश करनेवाले हैं ऐसे सदाशिवजीको मैं सेवन करता हूं ॥ १० ॥

जयत्यदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस-
द्विनिर्ग्गमक्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्
धिमिन्धिमिन्धिमिन्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल
ध्वनिक्रमप्रवर्त्तितप्रचंडतांडवशिशवः ११

कराल भुजङ्ग विनिर्गम श्वास प्रवेग ललाट हुताशन राजै । महेश्वर ताण्डवनृत्यकरैं जिहि मध्यमृदङ्ग धिमिन्धिमि बाजै ॥ मनो रव मङ्गल रूपधरे ध्वनि मध्य प्रवर्त्ति दशौदिशि भ्राजै । सदाशिवकी जयहोय सदा जिनको अवलोकि मृषाभ्रमलाजै ॥ ११ ॥

जिन श्रीमहादेवजी के भयंकर मस्तक की अग्नि भ्रमगा करनेहुये विपमसर्पों के फुफकार छोड़ने से अधिक प्रकाश-मान होता है और जिन सदाशिवजी ने धिमि धिमि धिमि धिमि मंगलरूपी मृदंगको बजावते हुये प्रचण्ड तांडव नृत्यकिया सो श्रीमहादेवजी जय को प्राप्त होवैं ॥ ११ ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोस्सुहृद्विपक्षपक्षयोः ॥
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदासदाशिवंभजाम्यहम्

सखा रिपु रत्न अमूल्य प्रलोष्ठ पखान सुतल्प सुखासनऐनी । भुजङ्ग सुमोतिनमाल प्रजा महिपाल महा तृण पङ्कजनैनी ॥ कदा इन मध्य प्रवर्त्तित मों मति होइहि एकहि भाव करैनी । सदाशिवको भजि पाउब भक्ति कदा सुख सम्पति आनँददैनी ॥ १२ ॥

सुन्दर चित्र विचित्र कोमल पुष्पों की शय्या और कठोर पत्थर में व मोतियों की माला और सर्प में व बड़े मूल्यवाले रत्न और ईंट आदि में व मित्र और शत्रु में व तृण और कमलनयनी नायका में व प्रजा और महान् राजराजेश्वर में समान भाव करके कब मैं सदाशिव का भजन करूँगा ॥ १२ ॥

कदानिलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरेवसन्
विमुक्तदुर्मतिस्सदाशिरस्थमञ्जलिंवहन्॥
विलोललोललोचनाललामभाललग्नकं
शिवेतिमंत्रमुच्चरन्सदासुखीभवाम्यहम्

कदा अवलोकि तरङ्गित गङ्ग निकुञ्ज सदा तिहि बास करूंगो। कदा शिवहेतु बहावत नीर सरीसुर अञ्जलि शीश धरूँगो॥ सुअङ्कित भाल शिवा शिवमन्त्र कदा जपिकै मति दुष्ट हरूंगो। कदा शिव में रति या विधि कै उर में नित ताकहँ ध्यान धरूँगो॥ १३॥

कब मैं गंगाजी के निकट बनमें बास करताहुआ गंगा-जल से पूर्ण अंजली अपने शीश पर धरके शिवके हेतु नीर बहावता हुआ और दुष्टमति से रहित होकर श्री पार्वतीजी के मस्तकमें लिखा हुआ मन्त्र (शिव) उच्चारण करता हुआ निरन्तर सुख को प्राप्त होऊँगा॥ १३॥

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका
निगुंफनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः ॥
तनोतुनोमनोमुदंविनोदिनीमहर्निशं
परश्रियःपरम्पदन्तदङ्गजत्विषाञ्चयः १४

सदाशिवके नित पूजनको अमरी अवली चलि आवत धाई। झरैं निजशीश प्रसून पराग करैं शिवकी अति सुन्दरताई ॥ त्विषाचय अंग अनंग अरी निशिवासर मों मन मोद बढ़ाई। वही अति श्रेय महेश्वरको यश गावत हैं हम ध्यान लगाई ॥ १४ ॥

जिन श्रीमहादेवजी के अंगकी परमश्रेष्ठ शोभासमूह सो देवांगनाओं के मस्तक में बँधेहुये जे पुष्पों के गुच्छा तिन से झरता हुआ जो पराग तिससे अत्यन्त मनोहर हो रहा है सो शोभासमूह हमारे मन के आनन्द को रात्रि दिन बढ़ावै ॥ १४ ॥

प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारिणी
महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना ॥
विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः
शिवेतिमंत्रभूषणाजगज्जयायजायताम् १५

विवाह शिवाशिव कालिक गान कियो रमणी अणिमादिक आई। शिवेति सुमन्त्र विभूषित शब्द जहां अति मंगल रूप बिछाई ॥ प्रचण्ड हुताशन वाडव तुल्य महाअशुभानि विनाशत गाई। जगज्जय होय सदा ध्वनिसों मनमोर बसै पद शम्भु सदाई ॥ १५ ॥

श्रीपार्वतीजी के विवाहके समय गान की ध्वनि जिस को कि आठों सिद्धी अर्थात् अणिमा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८ ने स्त्रीजन होकर गान किया जो गान (शिव) इस मन्त्र से विभूषित है और बहुत भयंकर वड़वानल के समान अशुभों को नाश करनेवाला है वह गान की ध्वनि सम्पूर्ण संसार के जय को प्राप्त करे ॥ १५ ॥

इति

शिवमहिम्नस्तोत्र

पुष्पदन्ताचार्य-कृत मूल और पं० गिरिजाप्रसाद द्विवेदीजी कृत हिंदी भाषानुवाद-सहित। इसमें श्री-महादेवजी की स्तुति शिखरिणी श्लोकों में वर्णित है। जो प्रतिदिन इस श्रेष्ठ स्तोत्र का परमभक्ति से पाठ करते हैं, वे शिवलोक में रुद्र-तुल्य और इस लोक में धनी, आयुष्मान्, पुत्रवान् और कीर्तिमान् होकर सुख भोगते हैं। पृष्ठ-संख्या ८४; मूल्य ।)

शिवमहिम्नस्तोत्र

यह स्तोत्र खूब मोटे अक्षरों में छापा गया है। इसमें केवल मूल ही मूल है। पृष्ठ-संख्या ३२; मूल्य -)

विष्णुसहस्रनाम

भाषा-टीका सहित। टीकाकार रायबहादुर बाबू ज़ालिमसिंह पोस्टमास्टर जनरल ग्वालियर। इसमें पहले मूल, फिर पदच्छेद, बाईं ओर अन्वय, दाहिनी ओर शब्दार्थ और सबसे पीछे भावार्थ दिया गया है। जो विष्णुसहस्रनाम के गूढ़ अर्थों को समझना चाहते हैं अथवा जो तोते की तरह बिना समझे पाठ करना नहीं चाहते, उनके लिये यह पुस्तक अति उत्तम है। पृष्ठ-संख्या १७८; मूल्य ॥।)